संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रो की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 66 ■ फरवरी 2025

छत्रपति शिवाजी जयंती

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, मुख्यालय पर दिनांक 19 नवंबर 2025 को छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती मनाई गयी। इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि हम सभी को शिवाजी महाराज की ऐतिहासिक भूमिका एवं शौर्य गाथा को जानना तथा उनकी विशेषताओं को आत्मसात करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर विभाग के विभागाध्यक्ष के साथ सभी शिक्षकों एवं प्रशिक्षणार्थियों ने सहभागिता दी।

प्रो. कुळकर्णी पुरस्कृत

भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली द्वारा डॉ. नंदिनी साहू (कुलपति-हिंदी विश्वविद्यालय, हावड़ा), डॉ. नासिरा शर्मा (सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका, डॉ. प्रकाश सिंग), (दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ. पूरनचंद टंडन (सचिव, भारतीय अनुवाद परिषद) के कर-कमलों से केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी को डॉ. गार्गी गुप्त द्विवागीश पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें स्मृति चिन्ह और प्रमाणपत्र दिया गया। ❑

डॉ. भारती बने मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक

भाषाविद्, डॉ. रणजीत भारती, केंद्रीय हिंदी संस्थान के मैसूर केंद्र के 13वें क्षेत्रीय निदेशक का दायित्व ग्रहण किया। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान की विभिन्न योजनाओं और आगामी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की। ❑

एक भारत-श्रेष्ठ भारत

काशी-तमिल संगमम

एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने वाला कार्यक्रम 'काशी तमिल संगमम' का सफल आयोजन केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अध्यापक शिक्षा विभाग एवं क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद के द्वारा आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे, संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी सहित अन्य महत्वपूर्ण विद्वानों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. गुरुराज (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा विशिष्ट अतिथि श्री किशोर तलवार (वाइस प्रेसीडेंट नेक्सज टेक्नॉलॉजी) रहे।

संस्थान के अटल बिहारी बाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में दिनांक 12 फरवरी 2025 को कार्यक्रम में अपनी बात रखते हुए शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष प्रो. दुबे ने कहा कि काशी तमिल संगमम कार्यक्रम एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने तथा सामंजस्य पूर्ण विकास की आधारशिला रखने वाला कार्यक्रम है। वैसे तो यह कार्यक्रम भारत के उत्तर और दक्षिण के बीच ऐतिहासिक सभ्यतागत संबंधों के

कई पहलुओं का जश्न है लेकिन इसका व्यापक उद्देश्य उत्तर दक्षिण के ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं को करीब लाना, हमारी साझा विरासत को विकसित करने के साथ मुख्यरूप से भाषा के सहारे इन क्षेत्रों के लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना है। सुखद है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी ऐसे सामंजस्यपूर्ण बिंदुओं पर बहुत बल दिया गया है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे कार्यक्रम संस्कृत और तमिल भाषा में निहित ज्ञान परंपरा को जानने का अवसर प्रदान करते हैं। प्रो. कुळकर्णी ने कहा कि तमिल सबसे पुरातन भाषा है। भक्ति की शुरूआत दक्षिण से हुई और धीर-धीरे उत्तर की ओर फैली। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति पूरे देश में देखी जा सकती है। कार्यक्रम संयोजक प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष अध्यापक शिक्षा विभाग ने स्वागत वक्तव्य एवं संस्थान तथा कार्यक्रम का परिचय देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम तमिलनाडु और वाराणसी के बीच सदियों पुराने संबंधों को खोजने के लिए भारत सरकार द्वारा की गयी पहल का परिणाम है।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के विद्यार्थी एच. श्री गणेश पारंगत द्वितीय वर्ष के छात्र ने एक तमिल गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी तथा सुमिता सुंदरम पारंगत द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा ने 'हिंदी मेरा शरीर है तो तमिल मेरी आत्मा है' कथन देकर हिंदी में अपनी बात रखी। इस कार्यक्रम में तमिल के कई विद्वानों ने अपनी बात रखी जिसमें शिक्षा संकाय दयालबाग के डॉ. प्रेम सरन तिरूमलाई ने तमिल भाषा की गहराई पर चर्चा की तथा प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक केंद्रीय हिंदी संस्थान ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में आमंत्रित सदस्यों श्रीमती इलावरासी, श्रीमती

शेष पृष्ठ 07 पर जारी...

थाईलैंड के शैक्षिक दल का मुख्यालय संदर्शन

थाईलैंड के एक 08 सदस्यीय शैक्षिक दल ने दिनांक 24 फरवरी 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के मुख्यालय का संदर्शन किया। शैक्षिक भ्रमण पर आए इस दल में 03 सदस्य विदेशों में हिंदी प्रचार प्रसार योजना के अंतर्गत संस्थान के पूर्व विद्यार्थी भी रह चुके हैं। शैक्षिक दल के सदस्यों में पद्मा स्वांगश्री, अभिसरा जयरत्त, मकर गम्भेज, पियाधिका रुको, सिरिनभा तितापन, मिजु जुरिओज (दिनकर), ख्वंजदा वीवोंग तथा सेकसन सवाग्श्री शामिल रहे।

उक्त शैक्षिक दल विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीना सहित विभाग के अन्य शैक्षिक सदस्यों से औपचारिक भेंट की तथा उनके समक्ष अपनी खुशी का इजहार किया। विभागाध्यक्ष सहित अन्य शैक्षिक सदस्यों ने प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों के प्रयास की भूरि-भूरि सराहना की तथा आगामी भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी।

मालूम हो कि भारत और थाईलैंड एक दूसरे से सांस्कृतिक तौर पर गहराई से जुड़े हुए हैं। परंपराएं दोनों देशों को बांधकर चलती हैं। दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत का संबंध सांस्कृतिक भी है और वाणिज्यिक भी है। संस्कृति और पालि ग्रंथों में थाईलैंड को कथकोश, स्वर्णभूमि, स्वर्णद्वीप जैसे अलग-अलग नामों से संबोधित किया गया है। भारतीय रामायण और थाईलैंड की रामाकियेन दोनों देशों को जोड़ती है जबकि भगवान बुद्ध के प्रति साझी श्रद्धा इन्हें एकजुट करती है। आजादी के बाद से ही भारत की एक्टईस्ट और थाईलैंड की एक्टवेस्ट की नींद एक दूसरे की पूरक बनी हुई है। ❑

गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य: दशा और दिशा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा दिनांक 20-21 फरवरी, 2025 को 'गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्यः दशा और दिशा' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी से पूर्व हिंदी लेखिका डॉ. दीप्ति अग्रवाल द्वारा गिरमिटिया हिंदी साहित्य से संबंधित पोस्टर प्रदर्शनी और संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया, जिसमें प्रो. आशु रानी (कुलपति, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा), डॉ. नरेंद्र पाठक (साहित्य अकादमी, दिल्ली के माननीय सदस्य), प्रो. माधुरी रामधारी (महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस) और प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी (निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा) उपस्थित रहे। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने संस्थान का परिचय दिया और डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा ने संगोष्ठी के विषय को स्पष्ट करते हुए कहा कि साहित्य गिरमिटिया नहीं होता, बल्कि साहित्यकार गिरमिटिया या

प्रवासी हो सकते हैं। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'प्रवासी जगत' के विशेषांक का विमोचन किया गया। साथ ही, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा प्रस्तावित हिंदी ओलंपियाड 2025 के पोस्टर का भी विमोचन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि, प्रो. आशु रानी ने गिरमिटिया समुदाय के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला, वहीं डॉ. नरेंद्र पाठक ने उनके संघर्ष और सांस्कृतिक योगदान को रेखांकित किया। बीज वक्ता प्रो. माधुरी रामधारी ने गिरमिटिया साहित्य के विकास पर विस्तृत चर्चा की। निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने प्रवासी और गिरमिटिया साहित्य के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए इस विमर्श की महत्ता पर जोर दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. प्रणीता मिश्र, और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दीपामणि बरुआ, ने किया। भोजनोपरांत दो अकादमिक सत्र आयोजित किए गए, जिनमें प्रो. विमलेश कांति वर्मा, प्रो. हरिशंकर, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ, डॉ. बलविंदर कौर, डॉ. विजय लोहार, डॉ. विद्यासागर सिंह, डॉ. दत्ता कोल्हारे, प्रो. जवाहर कर्णावत और प्रो. सपना गुप्ता सहित कई विद्वानों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन डॉ. अरविंद रावत, डॉ. शमा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सरोज राय, तथा डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, ने दिया। संध्या काल में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें 19 देशों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ. रेणु चौधरी, ने किया। संगोष्ठी के दूसरे दिन पहले सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुरेशचंद्र अग्रवाल 'ऋतुपर्ण' (के. के. बिरला फाउंडेशन), ने की, जबकि प्रमुख वक्ता प्रो. बीना शर्मा रहीं। इस सत्र में सुनीता नारायण (न्यूजीलैंड, ऑनलाइन), डॉ. नीरू कुमारी, डॉ. आशा रानी सुंडी, डॉ. सुभाषिनी लता कुमार (फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी) और डॉ. मलखान सिंह (जेएनयू, दिल्ली) सहित कई शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। समापन सत्र में संगोष्ठी संयोजक डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की और प्रमुख वक्ता प्रो. माधुरी रामधारी और प्रो. सुरेंद्र दुबे (उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल) ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। ❑

मातृभाषा दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता

दिनांक 21 फरवरी, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर प्रतियोगता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अलग-अलग देशों कजाकिस्तान, मंगोलिया, श्रीलंका, जापान, थाइलैंड, कम्बोडिया, ताजिकिस्तान, पोलैण्ड, बुल्गारिया, चीन, त्रिनिडाड एवं टोबैगो, सीरिया इत्यादि देशों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जिनमें प्रथम स्थान पर श्रीलंका की सचिनि रहीं द्वितीय और तृतीय स्थान पर दो-दो विद्यार्थी रहे। द्वितीय स्थान असलम (श्रीलंका), शषिप्रभा (श्रीलंका) ने पाया तृतीय स्थान पर कजाकिस्तान की बीबीगुल और सीरिया की सुहेर अली रहीं।

समापन कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी मातृभाषा में कविताएँ, गीत आदि प्रस्तुत किए। डॉ. परमान सिंह ने मातृभाषा दिवस के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। निर्णायक के रूप में प्रो. सपना गुप्ता, विभागाध्यक्ष नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग तथा डॉ. मीनाक्षी दुबे, विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री विभाग उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा तथा शिक्षकगण डॉ. दीपामणि बरूआ, डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, डॉ. रेणु चौधरी, डॉ. शमा, डॉ. अरविंद कुमार रावत, श्री अरविन्द कुमार शुक्ला तथा अभिषेक कुमार निगम उपस्थित रहे। ❑

प्रो. बीना शर्मा तथा प्रो. मीरा सरीन के व्याख्यान आयोजित

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा 6 फरवरी, 2025 को 'भारतीय ज्ञान परंपरा' : एक परिचय विषय पर प्रो. बीना शर्मा के विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहुत ही वृहद विषय है।

इसे जानने समझने के लिए पूरा मानव जीवन कम है। 02 घंटे के व्याख्यान में इसे समेटना संभव नहीं है। उन्होंने गुरु शिष्य परंपरा प्राचीन शिक्षा पद्धति, योग आदि विषयों पर भी विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया। व्याख्यान के मध्य प्रश्नोत्तरी के माध्यम से भी विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को हल किया।

दिनांक 07 फरवरी, 2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण द्वारा 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और विदेशियों की उच्चारणगत समस्याएँ' विषय पर प्रो. मीरा सरीन के एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने अलग-अलग देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की स्थितियों पर चर्चा की साथ ही कक्षा में भाषा सीखते समय विद्यार्थी किन-किन समस्याओं से गुजरते हैं और उनका क्या समाधान हो सकता हैं विषय पर भी उन्होंने विचार रखे। ❑

लेप्चा लोक साहित्य की कार्यशाला

'लेप्चा लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 10.02.2025 से 12.02.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र कुरमोमली, जीवन थिड मार्ग गांतोक (सिक्किम) में विद्वानों/विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में डॉ काछो लेप्चा, पाठ्य पुस्तक अधिकारी, डॉ. छुकी लेप्चा श्री दाउछेन लेप्चा डॉ. सोनाम ओंगम् भूटिया, श्रीमती शोभा शर्मा, डी.ई.ओ. (टेक्निकल एसिस्टेंट) भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग विशेषज्ञ ने भाग लिया तथा इस माह में विशेषज्ञों को कार्य संबंधी स्मरण पत्र भेजे गए। ❑

कार्यभार ग्रहण

डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में एसोसिएट प्रोफेसर भाषाविज्ञान के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। डॉ. त्रिपाठी की स्वलिखित एवं संपादित दर्जनों पुस्तकें और 80 से अधिक लेख विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। ❑

भावविह्वल हुईं पौलेंड की मैग्डेलेना

संस्थान के मुख्यालय आगरा में 'विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार योजना' की शुरूआत वर्ष 1991 से हुई थी। उक्त योजना के अंतर्गत सत्र 1991-92 में प्रवेश प्राप्त विदेशी छात्रा मैग्डेलेना कोलाक्ज (पौलेंड) भारत भ्रमण के दौरान दिनांक 10.02.2024 को संस्थान के अंतरराष्ट्रीय शिक्षण विभाग का संदर्शन किया तथा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा सहित अन्य शैक्षिक सदस्यों से औपचारिक भेंट की। बातचीत के दौरान 33 वर्ष पहले की अपनी मीठी यादों को सदस्यों के बीच साझा किया। ❑

सांस्कृतिक प्रतियोगिता

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा दो दिवसीय विभागीय वार्षिक सांस्कृतिक प्रतियोगिता लोक रंग का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी शिक्षण निष्णात (प्रथम व द्वितीय वर्ष), हिंदी शिक्षण पारंगत (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष), हिंदी शिक्षण प्रवीण (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष) तथा हिंदी शिक्षक डिप्लोमा (तृतीय वर्ष) के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक एवं प्रो. चंद्रकात कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में प्रथम दिन एकल गान (हिंदी एवं प्रादेशिक), युगल गान (हिंदी एवं प्रादेशिक), समूह गान (हिंदी एवं प्रादेशिक), मूक एकल अभिनय एवं फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिता के द्वितीय दिन के प्रथम सत्र में एकल रंगोली, समूह अभिनय, एकल नृत्य (हिंदी/प्रादेशिक), युगल नृत्य (हिंदी/प्रादेशिक) एवं समूह नृत्य (हिंदी/प्रादेशिक) प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में डॉ. लकी टॉक, सहायक प्रोफेसर, मूर्तिकला, ड्राइंग एवं पेंटिग विभाग, कला संकाय, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, आगरा एवं डॉ. रोशनी गिडवानी, निर्देशक, नृत्य केंद्र, कालिंदी इंस्टीट्यूट ऑफ डांस एंड म्यूजिक तथा प्रसिद्ध कत्थक कलाकार, आगरा रहीं।

14 फरवरी को सांस्कृतिक प्रतियोगिता के द्वितीय सत्र में समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समापन कार्यक्रम जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. सपना गुप्ता, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. मीनाक्षी दुबे, विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर सामग्री निर्माण विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं परिणामों की घोषणा प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग ने की। कार्यक्रम का संचालन, सांस्कृतिक संयोजक डॉ. प्रणीता मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन सांस्कृतिक सह संयोजक डॉ. राजश्री ने किया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के सभी शैक्षिक सदस्य उपस्थित रहे। प्रतियोगिता को सफल बनाने में सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी के सदस्यों तथा गायन, वादन एवं नृत्य के प्रशिक्षक शिक्षकों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। ❑

संपादकीय

माँ-मातृभूमि-मातृभाषा

प्रिय पाठकों,

फरवरी का महीना यूँ तो दिनों की संख्या के हिसाब से सभी महीनों में छोटा होता है लेकिन केंद्रीय हिंदी संस्थान व उसके सभी क्षेत्रीय केंद्रों की शैक्षणिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिहाज से देखें तो बड़ा साबित हुआ है। इस महीने मुख्यालय सहित विभिन्न केंद्रों द्वारा महत्त्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित हुईं, वहीं उत्तर-दक्षिण को जोड़ने वाली केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना 'काशी तमिल संगमम' के तहत प्रभावी कार्यक्रम भी संपन्न हुए। छत्रपति शिवाजी महाराज तथा पद्मभूषण से अलंकृत डॉ मोटूरी सत्यनारायण जी जैसे पुरखों को याद करते हुए उनकी जन्म जयंती मनाई गई। अंतरर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर संस्थान के सभी केंद्रों पर विभिन्न शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

हम सभी जानते हैं कि अपनी भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए मातृभाषा सबसे प्रभावी माध्यम है, क्योंकि यह भावनात्मक रूप से हमें एक सूत्र में जोड़कर 'सगेपन' का अहसास कराती है। विभिन्न अनुसंधानों के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि जो लोग अपनी मातृभाषा में दक्ष हैं, वे आमतौर पर शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यही कारण है कि शिक्षाविद प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने को प्राथमिकता देते हैं ताकि छात्र अपने अकादमिक जीवन में बेहतर कुशलता और सफलता अर्जित कर सकें।

बहुभाषावाद की भावना से युक्त 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' हर साल 21 फरवरी को मनाया जाता है। यूनेस्को ने इस दिन की घोषणा 17 नवंबर 1999 को की थी, और इसे पहली बार 21 फरवरी 2000 को मनाया गया। सन् 2002 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव पारित कर आधिकारिक रूप से इस दिन को मान्यता प्रदान की।

बीते वर्षों में, अंतरर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के माध्यम से मातृभाषा और बहुभाषी शिक्षा के विभिन्न सरोकारों पर काम किया गया, जिनमें 'समाज और शिक्षा में समावेशन के लिए बहुभाषावाद को बढ़ावा देना' (2021), 'बहुभाषी शिक्षा के लिए तकनीक का उपयोगः चुनौतियाँ और अवसर' (2022),'शिक्षा परिवर्तन के लिए बहुभाषी शिक्षाः एक आवश्यकता' (2023), 'बहुभाषी शिक्षाः सीखने और पीढ़ीगत आदान-प्रदान का एक स्तंभ' (2024) उल्लेखनीय हैं। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की 25वीं वर्षगाँठ मनाई जा रही है, जो भाषा संरक्षण के महत्व के प्रति हमारे सरोकारों को उजागर करती है, ताकि सांस्कृतिक विरासत व भाषिक विविधताओं को सुरक्षित रखा जा सके और एक समावेशी समाज का निर्माण संभव हो सके।

'बहुभाषावाद' हमारे जीवन के कई पहलुओं संचार, शिक्षा के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित अन्य सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से भी जुड़ा हुआ है। एसडीजी 5, महिलाओं के सशक्तिकरण और लैंगिक समानता, एसडीजी 10 असमानताओं को दूर करने तथा एसडीजी 16 शांति, न्याय और मजबूत संस्थानों को बढ़ावा देता है। विकास के ये लक्ष्य परोक्ष-अपरोक्ष रूप से मातृभाषा और बहुभाषा के प्रश्नों से जुड़े हुए हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मातृभाषा का उपयोग बेहद महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से, कई देश अभी भी एकभाषी शिक्षा-प्रणाली को अपना रहे हैं, जिससे छात्रों का साक्षरता कौशल अनपेक्षित रूप से प्रभावित होता है। यूनेस्को द्वारा 'वैश्विक शिक्षा निगरानी' रिपोर्ट के तहत प्रकाशित नीति-पत्र, जिसका शीर्षक है- 'अगर आप समझ नहीं पाएँगे, तो सीखेंगे कैसे?' में इस बात की गंभीर चर्चा है कि दुनिया भर में 40 प्रतिशत लोग अपनी मातृभाषा में शिक्षा से वंचित हैं, जिससे एक असमान शैक्षिक वातावरण का निर्माण हो रहा है।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में 120 से भी अधिक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार, हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसके लगभग 54.83 करोड़ वक्ता हैं, जो देश की कुल जनसंख्या का 44.63 प्रतिशत हैं। हिंदी वर्षों से 'जन-भाषा' के रूप में भारत और अन्य देशों की विभिन्न संस्कृतियों को एकजुट करने का कार्य कर रही है।

वर्तमान वैश्विक युग में एक से अधिक भाषाओं में दक्षता हासिल करना एक कौशल है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में संवाद करने और बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। दक्षिण अफ्रीका के प्रथम राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने एक बार कहा था, 'यदि आप किसी व्यक्ति से ऐसी भाषा में बात करते हैं, जिसे वह समझता है, तो वह उसके केवल दिमाग तक जाती है, लेकिन यदि आप उससे उसकी मातृभाषा में बात करते हैं, तो वह उसके दिल की गहराइयों तक पहुँचती है।'

आज भारतवर्ष विभिन्न रूपों में विकास के मार्ग पर अग्रसर है। नया भारत, समर्थ भारत, सशक्त भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। अतः यह आवश्यक है कि मातृभाषा शिक्षा एवं संस्कार का माध्यम बने। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा और बहुभाषा पर केंद्रित है। यह एक ओर जहाँ भारत केंद्रित तो दूसरी ओर बालक केंद्रित है। मातृभाषा के सहारे ही बालक नैसर्गिक रूप से ज्ञानात्मक और विकासात्मक अवस्थाओं तक पहुँच सकता है। हालांकि कोई अन्य भाषा सीखने में बुराई नहीं है लेकिन पहले सम्मान अपनी मातृभूमि और अपनी मातृभाषा के लिए आवश्यक है। ज्ञात हो कि केंद्रीय हिंदी संस्थान 'हिंदी' के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के उन्नयन हेतु नवाचारों के लिए सतत प्रयत्नशील है।

आइए हम सभी भाषाओं का सम्मान करने, अपनी आने वाली पीढ़ियों को विकसित करने और अपनी जड़ों को बरकरार रखने, मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एकजुट हों तथा नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन को प्राथमिकता दें। सभी सुधी पाठकों को अंतरर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा 12 एवं 13 फरवरी 2025 को दो दिवसीय खेलकूल प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया।

इस दो दिवसीय खेलकूल प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। लंबीकूद प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में राशिदबेग (100बी) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि इस्लोम (100ए) ने द्वितीय और नूर मुहम्मद (100ए) ने तृतीय स्थान हासिल किया। महिला वर्ग में उषिनी (300) ने पहला स्थान प्राप्त किया, बेगालिएवा (100बी) दूसरे और नदेज्दा (100बी) तीसरे स्थान पर रहीं। ऊँची कूद में पुरुष वर्ग में इस्लोम (100ए) ने प्रथम, नूर मुहम्मद (100ए) ने द्वितीय और थान (100ए) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में शषिनी (400) पहले, बीबीगुल (100बी) दूसरे और जानुदी (400) तीसरे स्थान पर रहीं।

योगासन प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में जनक (100बी) प्रथम, असलम (100बी) द्वितीय और नदीक (200) एवं तान (100बी) संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग में बीबीगुल (100बी) एवं नारांजुल (100बी) ने संयुक्त रुप से प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि शेन शिनयान (100बी) दूसरे और नदेज्दा (100बी) तीसरे स्थान पर रहीं।

बैडमिंटन में पुरुष वर्ग में तान (100ए) पहले और स्कोलथान (100बी) दूसरे स्थान पर रहे, वहीं महिला वर्ग में जारा (300) ने प्रथम और खबीबाखोन (200) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

गोलाफेंक प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में इस्लोम (100ए) ने प्रथम, जनक (100बी) ने द्वितीय और नूर मुहम्मद (100ए) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि निकोला (200) को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। महिला वर्ग में बेगालिएवा (100बी) प्रथम, फरजोना (200) द्वितीय और जारा (300) तृतीय स्थान पर रहीं, वहीं रवायेह (100बी) को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। 100 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में इस्लोम (100ए) प्रथम, नूर मुहम्मद (100ए) द्वितीय और थान (100ए) तृतीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग में ओर्होन (200) ने प्रथम, सत्यानी (300) ने द्वितीय और उषिनी (300) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

संतुलन दौड़ में पुरुष वर्ग में तान (100ए) ने पहला और राशिदबेग (100बी) ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में पियूमी (400) प्रथम और जुखरा (100बी) द्वितीय स्थान पर रहीं। रस्साकस्सी प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में टीम बी (नूर मुहम्मद, तिमूरजोन, नजीफी, इस्लोम, उसामा, कानाचो, मुहम्मद, थान) विजेता रही, जबकि टीम ए (नदीक, जनक, असलम, चार्मिका, पसन, एंटोनियो, निकोला, इमरान) उपविजेता बनी। महिला वर्ग में टीम बी (गुलसीमो, बेगालिएवा, रहीमजोदा मनीजा, नोदिरा, जुखरा, खबीबाखोन, असलबीगम, शरोमाई, सीरीमाओ, टू श्री) विजेता और टीम सी (रवायेह, रीम, खदीजा, हदीर, ओर्होन, बैगुल, मारिया, नानामी, नारांजुल, राबिया) उपविजेता रही। वॉलीबाल प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में टीम ए (नूर मुहम्मद, इस्लोम, जियोउद्दीन, कानाचो, तिमूरजोन, तान) ने जीत दर्ज की, जबकि टीम बी (जनक, असलम, नदीक, चार्मिका, पसन, निकोला) उपविजेता रही। महिला वर्ग में टीम ए (गुलसीमो, मनीजा, बेगालिएवा, फरजोना, असलबीगम, खबीबाखोन) विजेता रही और टीम बी (पियूमी, सत्यानी, शषिनी, मनीषा हंसिका, चतुरंगी, उषिनी) उपविजेता बनी।

इस प्रतियोगिता के दौरान सभी प्रतिभागियों ने खेल भावना और अनुशासन का परिचय दिया। विजेताओं को समापन समारोह में सम्मानित किया गया और इस आयोजन ने विद्यार्थियों को न केवल खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया। ❑

शोध परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय सेमिनार

दिनांक 15.02.2025 को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित- शोध परियोजना के अंतर्गत "ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में डिजिटल सशक्तिकरण एवं शिक्षाः विजन विकसित भारत @2047" विषय पर मिश्रित विधि से आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया एवं संस्थान के निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा सम्मेलन में आमंत्रित मुख्य अतिथि प्रो. सी. पटवर्धन, निदेशक, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा का स्वागत किया गया। परियोजना समन्वयक डॉ. शिल्पी कुमारी ने कार्यक्रम की संकल्पना रखी। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल, सहायक प्रोफेसर, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा संचालन डॉ. प्रणीता मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग ने किया। ❑

साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन जरूरी: प्रो. कुळकर्णी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, दिल्ली द्वारा दिनांक 6 फरवरी 2025 को विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली में 'भारतीय भाषाओं का अंतरसंबंध तथा राष्ट्रीय एकात्मकता' विषय पर चर्चा-परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि लिपियों के माध्यम से भारत में एकसूत्रता स्थापित की जा सकती है। उन्होंने साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की बात कही।

विषय विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के सेवानिवृत आचार्य प्रो. पूरनचंद टंडन ने कहा कि संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की स्रोतस्विनी है। उन्होंने भाषाओं के अखिल भारतीय स्वरूप को विभिन्न आयामों यथा - व्याकरणिक व्यवस्था, रोजगार, खानपान, लोकजीवन, साहित्य तथा कला के माध्यम से स्पष्ट किया। प्रो. योगेन्द्र कुमार ने मोटुरी सत्यनारायण का स्मरण किया करते हुए हिंदी संस्कृति की चर्चा की।

दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत द्वारा आमंत्रित अतिथियों का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत किया गया। संयोजन तथा संचालन प्रो. धनजी प्रसाद तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. ऋचा गुप्त द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी संस्थान के शिक्षक, प्रशासनिक कार्मिक, विदेशी छात्र तथा अन्य श्रोतागण उपस्थित रहे।

भाषण प्रतियोगिता

मातृभाषा दिवस के अवसर पर हिंदी शिक्षण निष्णात, हिंदी शिक्षण पारंगत, हिंदी शिक्षण प्रवीण तथा त्रिवर्षीय हिंदी शिक्षण डिप्लोमा सत्र 2024-25 के प्रशिक्षणार्थियों के लिए पोस्टर प्रदर्शनी, निबंध लेखन, काव्य पाठ, भाषण प्रतियोगिता तथा गीत गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान मुन्ना साहनी, द्वितीय स्थान इरफाना एवं सुमिता सुंदरम, तृतीय स्थान प्रीति आइच तथा सांत्वना पुरस्कार पिनु साहु ने प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग की निबंध प्रतियोगिता में स्वीटी महाकुड़ प्रथम, प्रॉमिस कामी द्वितीय तथा प्रीती कुमारी तृतीय स्थान पर रहीं। कनिष्ठ वर्ग की निबंध प्रतियोगिता में किरण साहु ने प्रथम, अंशिता उराँव ने द्वितीय तथा विक्रम उराँव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। काव्यपाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्रॉमिस कामी, द्वितीय स्थान दीपा मिश्रा तथा तृतीय स्थान मुन्ना साहनी एवं पुकार क्षेत्री ने प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में दीक्षा क्षेत्री प्रथम, स्वीटी महाकुड एवं लिली साहु द्वितीय तथा रोमाली नायक तृतीय स्थान पर रहीं। गीत गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सुधांशु थापा, द्वितीय स्थान ध्रुव ज्योति दास एवं बलराम कुमार महतो तथा तृतीय स्थान पुकार छेत्री एवं करिश्मा भेंगरा रहे। ❑

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी न होनी चाहिए – महावीर प्रसाद द्विवेदी

‘हिंदी शिक्षण-अधिगमः परंपरा और समकालीन संदर्भ

(दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी)

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, दिल्ली द्वारा संस्थान सभागार में ‘हिंदी शिक्षण-अधिगमः परंपरा और समकालीन संदर्भ’ विषय पर दिनांक 17-18 फरवरी 2025 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। कुल सात सत्रों में विभक्त अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए कुल 300 से अधिक पंजीकरण हुए, जिनमें 272 शोध सारांश प्राप्त हुए। इनमें से चयनित 100 प्रतिभागियों को शोधपत्र वाचन के लिए आमंत्रित किया गया, जिनमें से 84 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान विभिन्न सत्रों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ-साथ 20 अतिविशिष्ट विद्वानों ने हिस्सा लिया।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र दिनांक 17 फरवरी 2025 को प्रातः 10:30 बजे से केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आरंभ वाग्देवी मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन और गणेश वंदना से हुआ। तत्पश्चात अंगवस्त्रम् तथा पुस्तक गुच्छ भेंट कर सम्मानित अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया गया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री शंकरानंद बी आर जी तथा विशिष्ट वक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से भारतीय भाषा केंद्र की विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना झा ने हिस्सा लिया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया तथा विषय पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात विशिष्ट अतिथि ने भाषा शिक्षण के वर्तमान स्वरूप को उद्घाटित किया तो मुख्य अतिथि श्री शंकरानंद जी ने तैत्तिरीयोपनिषद से श्लोक को उद्धृत करते हुए शिक्षा के मूल उद्देश्यों को रेखांकित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. दुबे ने भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में समकालीन संदर्भ में शिक्षण प्रशिक्षण के स्वरूप की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. धनजी प्रसाद तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अपर्णा सारस्वत द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र के बाद ‘हिंदी शिक्षण अधिगम और भारतीय ज्ञान परंपरा’ विषयक प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर से डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी रहीं। इसकी अध्यक्षता दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत तथा संचालन प्रो. धनजी प्रसाद ने किया और आभार ज्ञापन सुश्री शोभनिम कुमारी द्वारा किया गया।

भोजनोपरांत ‘भाषा शिक्षण पद्धतियाँ (पेडॉगोजी)’ विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. रमेश चंद्र शर्मा ने किया। इस सत्र में प्रो. दिलीप सिंह ने ‘मुख्य वक्ता’ एवं प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने ‘विशिष्ट वक्ता’ के रूप में हिस्सा लिया। सत्र का संचालन दिल्ली केंद्र की सहायक प्रोफेसर शोभनिम कुमारी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर डॉ. ऋचा गुप्त ने किया।

संगोष्ठी का तृतीय सत्र समानांतर रहा। इसमें मुख्य सभागार में दिल्ली केंद्र के प्रो. योगेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में चले शोध पत्र वाचन सत्र में 22 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सत्र का संचालन दिल्ली केंद्र की सहायक प्रोफेसर डॉ. ऋचा गुप्त ने तथा अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा के विद्यार्थी श्री थेसौंग छोई किया।

इसके सामांतर डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी की अध्यक्षता में हुए समानांतर शोध पत्र वाचन कार्यक्रम में 14 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस सत्र का संचालन सुश्री शोभनिम कुमारी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा के विद्यार्थी श्री यांग रूई ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चौथा समानांतर सत्र केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. महावीर शरण जैन की अध्यक्षता में हुआ। सत्र में 20 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया। इस सत्र का संचालन डॉ. ऋचा गुप्त ने किया एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा की छात्रा सुश्री तोशिको ओत्सुका ने किया। इसी क्रम में हाईब्रीड पद्धति पर आधारित दूसरे शोध पत्र वाचन कार्यक्रम की अध्यक्षता आभासी रूप से जुड़े प्रो. गंगाधर वानोडे (क्षेत्रीय निदेशक, हैदराबाद केंद्र) ने किया। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. विमलेश कांति वर्मा की भी आभासी तौर पर विशेष उपस्थिति रही। इस सत्र में कुल 18 शोध पत्रों का वाचन किया गया। इस सत्र का संचालन सुश्री शोभनिम कुमारी तथा धन्यवाद विद्यार्थी युकी सोएदा द्वारा किया गया। संगोष्ठी का पांचवा सत्र ‘हिंदी शिक्षण और तकनीकी नवाचार’ विषय पर रहा। इस सत्र की अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. गिरिशनाथ झा ने की। सत्र में कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव के प्रो. राम पी. भावसार ने मुख्य वक्ता के रूप में तथा रेल मंत्रालय राजभाषा विभाग के पूर्व निदेशक डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने विशिष्ट वक्ता के रूप में हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली केंद्र की डॉ. ऋचा गुप्त ने तथा धन्यवाद ज्ञापन सुश्री शोभनिम कुमार ने किया।

संगोष्ठी का समापन सत्र अपराह्न 3:00 बजे से प्रारंभ हुआ। इसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने की।

इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली तथा विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. अवनिजेश अवस्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय की उपस्थिति रही। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. अपर्णा सारस्वत ने स्वागत वक्तव्य दिया। इसके पश्चात विशिष्ट वक्ता डॉ. अवस्थी ने पश्चिमी परंपराओं के अंधानुकरण से बचने की सलाह दी। मुख्य वक्ता डॉ. जोशी ने भारतीय परंपरा और जीवनशैली रेखांकित किया।

इस दौरान प्रो. धनजी प्रसाद ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन दिल्ली केंद्र के सहायक प्रोफेसर साकेत बहुगुणा ने किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ। ❑

मातृभाषा दिवस पर सभी ने गाए गीत कवित्त

केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र पर दिनांक 21 फरवरी 2025 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। इस मौके पर संस्थान में पढ़ रहे सभी विदेशी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी मातृभाषा में कविताएँ, गीत और लोक साहित्यिक रचनाओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का आरंभ संस्थान के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. योगेंद्र कुमार ने मातृभाषा के महत्व को समझाते हुए किया तथा बताया कि मातृभाषा कैसे हमारी पहचान गढ़ती है।

इस क्रम में कक्षा 300 की छात्रा तोशिको उत्सुका ने जापान की 3000 वर्ष पुरानी लोक संस्कृति में रची-बसी एक तेल बेचने निकले व्यवसाई की सुरमई कविता सुनाई वहीं कक्षा 100 की मलीसा ने मंदारिन भाषा की कविता का गायन किया। कक्षा 200 में पढ़ रहे यांग रुई ने अपने घर से दूर रहने की व्यथा का भावपूर्ण वर्णन अपनी मातृभाषा चीनी में स्वरचित कविता से किया। उपस्थित सभी छात्रों ने कविता और गीत के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रकट की।

संस्थान के प्राध्यापक प्रो. धनजी प्रसाद ने कार्यक्रम को अलग ही खूबसूरती प्रदान की। वे मातृभाषा सम्मान में अपनी माँ के साथ कार्यक्रम में उपस्थित हुए। प्रतिभागियों के अनुरोध पर प्रो. प्रसाद की मां ने एक सुंदर गीत प्रस्तुत किया। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था जिसमें एक अध्यापक ने अपने विद्यार्थियों को एक माँ की प्रत्यक्ष उपस्थिति में मातृभाषा का मोल समझाने की कोशिश की।

संस्थान की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्यार्थियों को भाषा और संस्कृति का अंतरसंबंध समझाया। विद्यार्थियों के साथ-साथ उपस्थित सभी शिक्षकों ने भी अपनी-अपनी मातृभाषा में गीत, कविता आदि प्रस्तुत कर कार्यक्रम को रोचक बनाया। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्राध्यापक शोभनीम कुमारी ने किया। ❑

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा सेंट जोसेफ महिला महाविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश के द्वितीय भाषा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 03-04 फरवरी, 2025 को "तेलुगु ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं का साहित्यिक योगदान" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन प्रारंभ हुआ। मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में गांधी सेंटर के अध्यक्ष एवं आचार्य, नागार्जुन विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य वी. बालमोहन दास, आभासी मंच के माध्यम से विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक सुनील कुळकर्णी निदेशक, सह संयोजक के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे और हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद की पूर्व हिंदी अध्यापिका प्रोफेसर आर. सुमनलता, संगोष्ठी संयोजक डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी तथा प्राचार्य डॉ. षैजी पी. डी. मंच पर उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि आचार्य वी. बालमोहन दास ने कहा कि तेलुगु के सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता विश्वनाथ सत्यनारायण, तेलुगु भाषा के प्रमुख कवि है। जिन्होंने भारतीय भाषा साहित्य में सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार जीता है।

संयोजक एवं द्वितीय भाषा विभागाध्यक्ष डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी ने संगोष्ठी औचित्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिंदी भाषियों को तेलुगु साहित्य की उत्कृष्टता की जानकारी प्रदान करने के प्रयासों के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा महाविद्यालय में सम्मेलन का आयोजन करना गौरव की बात है। संगोष्ठी के दौरान सह-संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने केंद्रीय हिंदी संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सुदूर विशाखापट्टनम स्थित संत जोसफ महिला महाविद्यालय की संगोष्ठी आयोजन के प्रति निष्ठा एवं हिंदी के प्रति उनकी रुचि को सराहा।

कॉलेज प्राचार्य ने देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों से आए उन सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया, जो दो दिवसीय सम्मेलन में वक्ता के रूप में भाग लेकर आचार्य नारायण रेड्डी और रावुरी भारद्वाज के साहित्यिक कार्यों और उनकी साहित्यिक प्रक्रियाओं के महत्व के बारे में अपना-अपना मंतव्य दिया। संगोष्ठी संयोजक डॉ. जयलक्ष्मी ने बताया कि इसमें सौ से अधिक संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं, छात्रों और भाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मंच पर उपस्थित अतिथियों ने डॉ. जयलक्ष्मी द्वारा लिखित अभिनंदन पुस्तक तथा संगोष्ठी विशेषांक का विमोचन किया।

दिनांक 04 फरवरी, 2025 को इस संगोष्ठी का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डीन, कॉलेज विकास परिषद, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टणम के आचार्य टी.वी. कृष्ण, विशिष्ट अतिथि के रूप में के विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. आर. एस. सर्राजु, आदिकवि नन्नया विश्वविद्यालय के तेलुगु विद्वान आचार्य टी. सत्यनारायण और संगोष्ठी प्रतिवेदन संयोजक डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी ने प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में अतिथि विद्वानों, वक्ताओं और शोधपत्र प्रस्तुतकर्ताओं ने ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता तेलुगु कवि विश्वनाथ सत्यनारायण, डॉ. सी. नारायण रेड्डी और रावुरी भारद्वाज के साहित्यिक योगदान से संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिया। इस दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रमुख रूप से डॉ. एस. कृष्णबाबु, डॉ. सी. निर्मालादेवी, डॉ. एस. एम. इकबाल, डॉ. विजय भारती, डॉ. सी. महालक्ष्मी तथा डॉ. एस. राव मौजूद थे।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि आचार्य टी.वी. कृष्ण ने संत जोसफ महाविद्यालय में संगोष्ठी- आयोजन करने हेतु केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा को बधाई दी।

संगोष्ठी में 80 लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने वक्ताओं, पुरोहितों और कॉलेज प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त किया। हिंदी अध्यापिका डॉ. एस. दीप्ति ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। दिया। सम्मेलन का समापन राष्ट्रगान के गायन के साथ हुआ। ❑

मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम

दिनांक 22.02.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के बहुउद्देशीय हाल में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरूआत में संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं अन्य सदस्यों ने दीप प्रज्ज्वलन कर माँ शारदे के चरणों में पुष्प सुमन अर्पित किए। इस दौरान अलग-अलग राज्यों के संस्थान कर्मियों ने अपनी मातृभाषा में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर नेपाल के कर्मचारी धुरबा द्वारा अपनी मातृभाषा में गीत गाना सभी के आकर्षण का केंद्र रहा। संस्थान के अध्यापक डॉ. फत्ताराम द्वारा राजस्थानी भाषा में वहाँ के लोकगीत प्रस्तुत किए। डॉ. संदीप कुमार ने अवधी एवं भोजपुरी भाषा में नाट्यगीत प्रस्तुत किया गया। श्री सजग तिवारी ने एवं डॉ. दीपेश व्यास ने बुंदेली राई गीत व आला खंड प्रस्तुत कर समाँ बाधा। डॉ. एस. राधा ने तेलुगु मातृभाषा में एक प्रेरक कहानी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अंत में केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने मराठी भाषा में आज के दिन की उपयोगिता एवं सरकार द्वारा सभी मातृभाषाओं के प्रोत्साहन के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए मराठी कविता के साथ अपनी विचार रखे। अंत में कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ. दीपेश व्यास ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। ❑

हिंदी भाषा संचेतना शिविर

दिनांक 18.02.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा टेरेसियनकॉलेज, मैसूर के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय प्रथम हिंदी भाषा संचेतना शिविर का उद्घाटन किया गया। शिविर के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनीलबाबूराव कुळकर्णी ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने हिंदी संचेतना शिविर के उद्देश्य एवं लाभ के बारे में प्रतिभागियों को बताया। शिविर के संयोजक एवं मैसूर केंद के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत एवं केंद्र का परिचय करवाया। सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री विवेक चार्ल्स ने प्रतिभागियों को शिविर के माध्यम से हिंदी सीखने को प्रेरित किया। इस हिंदी संचेतना शिविर में टेरेसियनकॉलेज, मैसूर के 79 प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया। सत्र का संचालन टेरेसियनकॉलेज, मैसूर के हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर श्री मोहन जी ने किया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. योगेंद्र मिश्र, डॉ. ज्योत्सना, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री राघवेंद्र, श्रीमति पदमा, श्री चेन्नेगोडा, श्री रमेश, कैलाश आदि उपस्थित थे। ❑

मातृभाषा का प्रोत्साहन

दिनांक 21.02.2025 को के केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा मातृ भाषा दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता एवं संयोजन केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय डॉ. रणजीत भारती ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने मातृ भाषा क्यों मनाए जाने के इतिहास एवं उसकी महत्ता के बारे में बताया। डॉ. योगेंद्र मिश्र ने अपनी मातृभाषा ब्रज में कुछ रचनाएं सुनाकर मातृभाषा के महत्व को उजागर किया।

समारोह का संचालन अतिथि वक्ता के तौर पर आमंत्रित, डॉ. पूर्णिमा जी ने किया। इस समारोह के अंतर्गत भाषण, पेंटिंग, निबंध आदि प्रतियोगिताओं में कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ❑

संस्थान की संगोष्ठी में शामिल होंगे महामहिम राज्यपाल

नांक 19.02.2025 को प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग माननीय राज्यपाल श्री सी. एच. विजयशंकर से औपचारिक भेंट कर केंद्रीय हिंदी संस्थान के उत्तरीय एवं शब्दकोश द्वारा स्वागत किया तथा केंद्र के

गतिविधियों की जानकारी दी एवं दिनांक 28-29 मार्च 2025 को राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया और उन्होंने मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रण स्वीकार किया। ❑

जब हम अपना जीवन जननी हिंदी,मातृभाषा हिंदी के लिए समर्पण करे दे तब हम हिंदी प्रेमी कहे जा सकते हैं – गोविन्द दास

विश्व पुस्तक मेले में माननीय उपाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र दुबे, निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी तथा डॉ.रविचंद टेकचंदानी के कर-कमलों द्वारा हिंदी मैथिली कोश का लोकार्पण हुआ।

विश्व पुस्तक मेले में किताबवाले प्रकाशन की ओर से प्रकाशित हिन्दुत्व दर्शन कर केंद्रित तीन ग्रंथों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी का स्वागत सत्कार करते हुए प्रकाशक।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की भाषा पत्रिका के 'डॉ.रामदरश मिश्र विशेषांक' का लोकार्पण उन्हीं के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे तथा निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

नराकास दक्षिण दिल्ली द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

दिल्ली केंद्र पर आयोजित संगोष्ठी के समापन समारोह को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी तथा मंचासीन बाएँ से प्रो. अपर्णा सारस्वत, प्रो. सुरेन्द्र दुबे, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रो. अवनिजेश अवस्थी।

विश्व पुस्तक मेले में नागरी लिपि परिषद द्वारा आयोजित 'नागरी लिपि एवं पुस्तक संस्कृति' विषयक परिचर्चा में मुख्य वक्ता के रूप में मार्गदर्शन करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी।

पृष्ठ 1 का शेष...

अनुराधा तलवार, श्रीमती के.हंसिनी, श्रीमती विजया तिरुमलाई, श्रीमती बीना बजाज, श्रीमती प्रभा चतुर्वेदी, श्री प्रेम कुमार, श्रीमती आनंदी राममूर्ति, डॉ. सरवनन, वेंकट जी, श्रीमती कपिला वेंकट, श्री प्रेम शंकर, श्रीमती सरन्या, डॉ.के.स्वामी दया, डॉ.प्रेम सरन तिरुमलाई, श्रीमान. डेविड, श्रीमती. डेविड, श्रीमा. शंकरन चंद्रन,तथा संस्थान के सभी विद्यार्थी के साथ शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रणीता मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजश्री ने किया।

वहीं दूसरी तरफ दिनांक 14 फरवरी 2025 को हैदराबाद केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता ऑनलाइन माध्यम से केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने की। मुख्य वक्ता के रूप में संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय भाषा समिति, दिल्ली के सदस्य श्री पंचालम सौंदर्यराजन तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के शासी परिषद सदस्य प्रो. आर.एस. सर्राजु उपस्थित थे। सम्मानित अतिथि के रूप में श्री के. सत्य राममूर्ति, आर. नागराज विशेष रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा साल 2022 से शुरू किया गया 'काशी तमिल संगम' का यह तृतीय सत्र है, जिनमें उत्तर से लेकर दक्षिण तक की सभ्यता एवं संस्कृति का समागम करते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए हैदराबाद केंद्र पर आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में आभासी मंच से केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने वक्तव्य में कहा कि तमिल सबसे पुरातन भाषा है। भक्ति की शुरूआत दक्षिण से लेकर उत्तर की ओर गई है। जिसके साथ ही यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति पूरे देश में देखी जा सकती है। कार्यक्रम में श्री पंचालम सौंदर्यराजन, प्रो. आर.एस. सर्राजु, श्री के. सत्य राममूर्ति, श्री जी. आर.एम. नडार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा सभी भाषाओं में समाहित है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. वानोडे ने सभी को सम्मान पट्टिका, मोमेंटो तथा माला पहनाकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों से अधिकारीगण भी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. फत्ताराम नायक ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दीपेश व्यास ने किया। ❑

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name: THE KENDRIYA HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA

Account Number : 42583260224

IFSC : SBIN0017686

MICR : 282002047

Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name : THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL

UPI ID : thekhsmagra@sbi

अर्थांतर

'सुधि' और 'सुधी'

हिंदी में 'सुधि' (याद, होश, चेत-खबर) खूब चलता है (जो संस्कृत में नहीं था) और 'सुध' का विकल्प है ('बृहत् हिंदी कोश' में 'सुचधि' के अर्थ के स्थान पर लिखा है-दे. 'सुध')। 'बेसुध' माने 'बेहोश, बदहवास'। 'सुध-बुध' माने 'होश-हवास'। चूँकि मराठी में 'सुध-बुध' की जगह 'शुद्ध-बुद्ध' है, इसलिए 'सुध' का ऐतिहासिक संबंध 'शुद्ध' से होने का अनुमान लगाया जा सकता है ('मानक हिंदी कोश' में 'सुधि' की व्युत्पत्ति 'शुद्ध या शोध' से सुझाई गई है, जब कि 'सुध' की व्युत्पत्ति 'सुधी' से संभावित बताई गई है)। उधर 'हिंदी-व्युत्पत्ति-कोश' में 'सुध-बुध' का ऐतिहासिक संबंध 'सुधी+बुद्धि' से माना गया है, जिस के आधार पर हम 'सुध' को सीधे 'सुधी' से व्युत्पन्न स्वीकार कर सकते हैं, जिस का अर्थ स्त्रीलिंग संज्ञा के रूप में 'सुंदर बुद्धि' है, पुल्लिंग संज्ञा के रूप में 'बुद्धिमान व्यक्ति, विद्वान्, पंडित, धार्मिक व्यक्ति' है, और विशेषण के रूप में 'सुबुद्धि, अच्छी समझ वाला, बुद्धिमान' है। 'सुधी' का 'धी' बराबर 'बुद्धि, समझ, मन' है। संस्कृत में 'सुधी' के समान 'कुधी' और 'दुष्टधी' भी बनते हैं।

एक उदाहरण–हिंदी विषय में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त डॉ. पराक्रम सिंह जैसे अनेक सुधी जनों ने भी 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस की 'सुधि' नहीं ली।

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

देश तथा जाति का उपकार उसके बालक तभी कर सकते हैं, जब उन्हें उनकी भाषा द्वारा शिक्षा मिली हो – पं. गिरधर शर्मा

हिंदी के महारथी मोटूरी जी

'केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक पद्मभूषण से सम्मानित डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी को उनकी 124वीं जयंती पर याद किया गया। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों शैक्षणिक प्रशासनिक कर्मियों ने उनके चरणों में नमन करते हुए उनकी हिंदी सेवा में दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला। संस्थान के हैदराबाद केंद्र के डॉ. फत्ताराम नायक तथा डॉ. दीपेश व्यास ने मोटूरि जी के जीवन संघर्ष के बारे में अपने विचार रखे।'

हिंदीतर क्षेत्र में हिंदी के प्रचार प्रसार की बात शुरू होते ही जिस महारथी महान मनीषी की भव्य मूर्ति आँखों के सम्मुख एकबारगी उभर कर आती है, उनका नाम है मोटूरी सत्यनारायण जी। सिर पर गांधी टोपी पहने धवल खादी वस्त्रधारी एक पुण्यात्मा जिसका लक्ष्य था हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार। 2 फरवरी 1902 ईस्वीं में आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोंडपाडु में जन्मे मोटूरी जी गांधी जी के निमंत्रण पर हिंदी प्रचार आंदोलन में शामिल हुए थे। एक बार जब उन्होंने हिंदी की मशाल थाम ली फिर ता-उम्र वे घूम-घूम कर हिंदी का अलख जागते रहे।

पद्मभूषण से अलंकृत डॉ॰ मोटूरी जी के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ हैं, हिंदी प्रचार के लिए उनकी तल्लीनता और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला अथक परिश्रम।

दक्षिण में 1918 में महात्मा गाँधी के सुपुत्र देवदास गांधी के नेतृत्व में हिंदी प्रचार का बीजारोपण हुआ। उसे पल्लवित, एवं पुष्पित करने में अनेक उत्तर एवं दक्षिण के समर्पित देशप्रेमी हिंदी प्रचारकों का सबल सहयोग रहा है, परंतु दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा तथा हिंदी प्रचार आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी पहचान कराने में मोटूरि जी का योगदान अप्रतिम है।

श्री सत्यनारायण जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रधान मंत्री का पद भार सँभालते हुए उन्होंने हिंदी भाषा, साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का जो परिचय दिया है वह अविस्मरणीय है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के लिए भी उनकी सेवाएँ गणनीय हैं। केंद्रीय शिक्षण मण्डल उर्फ केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा उनकी अंतरात्मा की उपज है। संविधान सभा के सूत्रधारों में श्री मोटूरि जी का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। राज्य सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने हिंदी को राष्ट्रव्यापी मान्यता दिलाने में जो भूमिका निभाई उसे कोई भी हिंदी प्रेमी नहीं भूल सकता। मोटूरी जी ने राष्ट्रभाषा हिंदी को राष्ट्रीयता की संवाहक मानकर उसके प्रसार प्रचार में न केवल अपना संपूर्ण जीवन होम किया अपितु कारागार की सजा भी भुगती।

श्री सत्यनारायण जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। वे अपनी मातृभाषा तेलुगु के साथ तमिल, अंग्रेज़ी, उर्दू, हिंदी तथा मराठी में भी समान रूप से दक्षता रखते थे और समस्त भारतीय भाषाओं के विकास के प्रबल पक्षधर थे। यही कारण है कि उन्होंने हिंदी प्रचार सभा की प्रारंभिक एवं उच्च परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में प्रांतीय भाषाओं के लिए 100 अंकों का एक प्रश्न पत्र अनिवार्य बनाया था।

भारत के उत्तर-दक्षिण को जोड़ने में एक भाषा-सेतु की भाँति उन्होंने कार्य किया। उनकी दृष्टि में राष्ट्रभाषा हिंदी भारत माता का हृदय है। उनको भली भाँति मालूम था कि समूचे भारतीय भाषाओं को एक साथ लेकर चलने की क्षमता हिंदी भाषा की ही है। जन-जीवन में हिंदी की बढ़ती हुई आवश्यकता को दृष्टि में रखकर इन्होंने हिंदी के विकास के लिए बहुत प्रयास किया। उनका मानना था 'हिंदी जो असम से लेकर पंजाब तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य तक की प्रादेशिक भाषा भी समझी जाती है। इस तरह हिंदी प्रादेशिक भाषाओं से आवृत होकर देश के मध्यस्थान में बसी हुई है जो शरीर में हृदय का उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य भी कर सकती हैं और उसे करना भी चाहिए।'

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के अतिरिक्त दक्षिण के चारों राज्यों में इसकी शाखाएँ खोली गयीं। तिरुच्चिनापल्ली में तमिलनाडु की शाखा, विजयवाड़ा में आन्ध्र की शाखा, एरनाकुलम में केरल की शाखा की प्रतिष्ठापना की गयी। वे 1938 ई. से 1960 ई. तक दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रधान सचिव रहे, जो शुरूआत में दक्षिण भारत हिंदुस्थानी सभा के नाम से प्रचलित थी। उन्होंने इतनी निष्ठा से इस सभा का कार्य-भार सँभाला कि वे अपने जीवन काल में ही उसके पर्याय बन गये।

मोटूरी जी को राज्य सभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया। भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में शामिल करने वालों की कतार में वे सबसे आगे रहे। भारतीय संविधान की धारा 343 से 351 (17 वें अध्याय) को निर्मित करने वाले प्रमुख सदस्यों में मोटूरी जी एक हैं। उन्होंने इसे संविधान की आत्मा माना है। हालाँकि वे इससे संतुष्ट नहीं थे, वे हिंदी भाषा के प्रयोजन पक्ष को लेकर, व्यावहारिक रूप में उसे अंग्रेज़ी के समकक्ष बिठाकर विस्तृत उपयोग पर बल देने की बात करते थे। उन्हें यह भान था कि यदि हिंदी प्रचार के कार्य और हिंदी प्रचार के आंदोलन को नयी गति नहीं दी जाएगी तो हिंदी पंगु भी हो सकती है। इसीलिए उन्होंने हिंदी भाषा के सजग प्रहरी रूप में नई जरूरतों और ज़माने की बदलती हवा को पहचानकर हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप की जोरदार वकालत की। उसके पक्ष में वातावरण निर्मित किया एवं उसे कार्यान्वित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाये।

मोटूरी जी का कथन है- 'जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जानेवाली हिंदी ही 'प्रयोजनमूलक हिंदी' है। भाषा के दो पक्ष हैं- एक का संबंध हमारी सौंदर्य परक अनुभूति का आलंबन है। यह आत्मकेंद्रित और आत्मसुख का उपकरण होता है। दूसरे का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकता और जीवन की उस व्यवस्था से है; जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है और जिसका संबंध मूलतः हमारी जीविका के साथ रहता है।

यानी भाषा का प्रयोजन मूलक पक्ष।

संसद सदस्य बनने के पश्चात् वे केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के अध्यक्ष रहे एवं उनके अध्यक्ष काल में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने प्रारंभिक दौर का सफल सफर तय किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्रियाकलापों ने अखिल भारतीय स्तर पर ख्याति समुपार्जित की है। अखिल भारतीय हिंदी परिषद' की स्थापना भी उनकी कल्पना का ही साकार रूप है।

सत्यनारायण जी स्वयं अपने आप में एक सुव्यवस्थित संस्था थे। उनके बिना हिंदी के बारे में दक्षिण के लोग सोच भी नहीं सकते। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने कतिपय पाठ्यपुस्तकों के अलावा दक्षिण के साहित्य, संस्कृति, भाषा आदि से हिंदी पाठकों को परिचित कराने के लिए अनेक लेख लिखे। उनके संपादकत्व में 'हिंदी विश्व कोश' दस भागों में प्रकाशित हुआ है। दक्षिण-भारत हिंदी प्रचार सभा का मुखपत्र 'हिंदी प्रचार समाचार' और 'दक्षिण भारत' का संपादन किया। 'राज भाषा और राज सेवक' 'संघ भाषा हिंदी और संघ सरकार', 'हिंदी का चतुर्मुखी रूप', 'हिंदुस्थानी का मसला', 'समन्वय का सूत्र हिंदी' आदि आलेखों द्वारा हिंदी भाषा के महत्व को प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया।

हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मोटूरी जी बताते हैं- हिंदी को सार्वदेशिक भाषा के रूप में विकसित करने के लिए इसे जो तरह तरह निभानी हैं, इस पर विचार होना चाहिए। हिंदी की भूमिकाएँ, प्रादेशिकता, राष्ट्रीयता, संघराज्य प्रशासन, सार्वदेशिकता, जनपदीय, अंतरप्रादेशिकता, सांस्कृतिक सामाजिकता, अंतर्राष्ट्रीय भारतीयता, भारतीय संस्कृति के प्रतीकत्व, अंतरर्राष्ट्रीय माध्यम की भूमिका के क्रम में हो सकती है।

हिंदी के प्रमाणित प्रचारकों में उनका स्थान सर्वोपरि था। हिंदी प्रचार-प्रसार के कार्य से मोटूरी जी लगभग सात दशकों तक जुड़े रहे तथा उन्होंने अपने जीवन पर्यंत हजारों हिंदी प्रचारकों की फौज तैयारी कर उन्होंने नई परंपरा का सूत्रपात किया। एक समारोह में भाषण देते हुए उन्होंने बताया था 'सत्तर वर्ष से ज्यादा समय हुआ मैं राष्ट्रभाषा के इस महत्त्वपूर्ण आंदोलन का अभिन्न अंग रहा और हजारों साथियों को जोड़ा तथा उनका सहयोग पाया।'

अतः मोटूरी जी जीवन पर्यंत हिंदी भाषा के विविध क्षेत्र जैसे राष्ट्रभाषा, राज-भाषा, संपर्क भाषा, नागरी लिपि, प्रयोजन मूलक हिंदी आदि अवधारणाओं के विकास में प्रयास किया तथा सफल भी रहे। इसलिए उन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। आज हिंदी को जो दर्जा मिला वह मोटूरी जी के अथक परिश्रम का फल है। हिंदी के भव्य फलक पर मोटूरी का विराट व्यक्तित्व सदा झलकता रहेगा। ❑

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।